UP Board Class 12 Hindi 2026 (Set 301 BA) Question Paper with Solutions

General Instructions

(i) This booklet contains 14 questions, each provided with a complete, step-by-step solution.

(ii) It comprises 16 single-correct multiple-choice questions.

(iii) Attempt each question on your own before reviewing the given solution.

1(a). 'ध्रुवस्वामिनी' गद्य-विधा की रचना है

(A) उपन्यास

(B) कहानी

(C) नाटक

(D) जीवनी

Correct Answer: (C) नाटक

Solution:

व्याख्या:
'ध्रुवस्वामिनी' जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित एक प्रसिद्ध नाटक है, जो गुप्तकालीन इतिहास पर आधारित है।

अंतिम उत्तर:
यह रचना विधा की दृष्टि से **नाटक** है।

1(b). 'त्यागपत्र' उपन्यास के लेखक हैं

(A) प्रेमचन्द

(B) जैनेन्द्र कुमार

(C) रामचन्द्र शुक्ल

(D) मोहन राकेश

Correct Answer: (B) जैनेन्द्र कुमार

Solution:

सुधार सहित व्याख्या:
पत्र में विकल्प (i) 'प्रेमचन्द' अंकित है, किन्तु यह तथ्यतः सही नहीं है — 'त्यागपत्र' (1937) मनोवैज्ञानिक उपन्यास के जनक **जैनेन्द्र कुमार** की प्रसिद्ध कृति है, जिसमें मृणाल नामक पात्र के माध्यम से नारी-मन का चित्रण हुआ है।

अंतिम उत्तर:
सही उत्तर **जैनेन्द्र कुमार** है।

1(c). 'वसुधा' पत्रिका के सम्पादक हैं

(A) हरिशंकर परसाई

(B) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(C) प्रताप नारायण मिश्र

(D) महादेवी वर्मा

Correct Answer: (C) प्रताप नारायण मिश्र

Solution:

व्याख्या:
उत्तर प्रदेश बोर्ड के पाठ्यक्रम में 'वसुधा' पत्रिका का सम्पादन प्रताप नारायण मिश्र से सम्बद्ध बताया गया है।

अंतिम उत्तर:
प्रताप नारायण मिश्र।

1(d). राहुल सांकृत्यायन की रचना है

(A) 'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा'

(B) 'परीक्षा गुरु'

(C) 'संयोगिता स्वयंवर'

(D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (A) 'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा'

Solution:

व्याख्या:
राहुल सांकृत्यायन हिन्दी के प्रसिद्ध घुमक्कड़ यात्रा-साहित्यकार थे और 'घुमक्कड़ शास्त्र' के प्रवर्तक माने जाते हैं।

अंतिम उत्तर:
'**अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा**' उन्हीं की रचना है।

1(e). 'मेरे निबंध' किसकी रचना है?

(A) प्रताप नारायण मिश्र

(B) श्याम सुन्दर दास

(C) बाबू गुलाब राय

(D) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

Correct Answer: (C) बाबू गुलाब राय

Solution:

व्याख्या:
बाबू गुलाबराय हिन्दी के सुप्रसिद्ध निबंधकार एवं समीक्षक थे, जिनके निबंध-संग्रहों में सहज, हास्य-व्यंग्य मिश्रित शैली मिलती है।

अंतिम उत्तर:
'मेरे निबंध' **बाबू गुलाबराय** की रचना है।

2(a). निम्नलिखित में से तारसप्तक के कवि हैं

(A) रामविलास शर्मा

(B) भवानी प्रसाद मिश्र

(C) शमशेर बहादुर सिंह

(D) रघुवीर सहाय

Correct Answer: (A) रामविलास शर्मा

Solution:

सुधार सहित व्याख्या:
'तारसप्तक' (1943, सम्पादक: अज्ञेय) में सात कवि संकलित थे — गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र जैन, भारत भूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर, **रामविलास शर्मा** और स्वयं अज्ञेय।

अंतिम उत्तर:
अतः सही उत्तर **रामविलास शर्मा** है।

2(b). 'अब्र' उपनाम से उर्दू में गजलों की रचना की

(A) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने

(B) बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने

(C) प्रताप नारायण मिश्र ने

(D) अमीर खुसरो ने

Correct Answer: (C) प्रताप नारायण मिश्र ने

Solution:

व्याख्या:
पाठ्यक्रम के अनुसार 'अब्र' उपनाम से उर्दू ग़ज़लें प्रताप नारायण मिश्र ने रचीं, जो भारतेंदु-मंडल के बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न लेखक थे।

अंतिम उत्तर:
प्रताप नारायण मिश्र।

2(c). 'यामा' के रचयिता हैं

(A) महादेवी वर्मा

(B) सुभद्राकुमारी चौहान

(C) विद्यापति

(D) जगनिक

Correct Answer: (A) महादेवी वर्मा

Solution:

व्याख्या:
'यामा' (1940) महादेवी वर्मा के 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा' और 'सान्ध्यगीत' — इन चार काव्य-संग्रहों का संकलन है, जिस पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

अंतिम उत्तर:
महादेवी वर्मा।

2(d). 'अनामिका' किसकी रचना है?

(A) जयशंकर प्रसाद

(B) महादेवी वर्मा

(C) सुमित्रानंदन पंत

(D) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

Correct Answer: (D) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

Solution:

सुधार सहित व्याख्या:
'अनामिका' (1923) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का प्रसिद्ध काव्य-संग्रह है, जिसमें उनकी आरम्भिक छायावादी रचनाएँ संकलित हैं।

अंतिम उत्तर:
सही उत्तर **सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'** है।

2(e). 'मैंने उसको जब-जब देखा - लोहा देखा' पंक्ति के रचयिता हैं

(A) नागार्जुन

(B) केदारनाथ अग्रवाल

(C) मुक्तिबोध

(D) रामधारी सिंह 'दिनकर'

Correct Answer: (B) केदारनाथ अग्रवाल

Solution:

सुधार सहित व्याख्या:
यह पंक्ति प्रगतिशील कवि केदारनाथ अग्रवाल की प्रसिद्ध कविता 'लोहा' से ली गई है, जिसमें लोहे के माध्यम से श्रमिक-जीवन की दृढ़ता का बिम्ब रचा गया है।

अंतिम उत्तर:
सही उत्तर **केदारनाथ अग्रवाल** है।

3(a). *गद्यांश:* राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है। मनुष्यों ने युगों-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना कबंध मात्र है, संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि सम्भव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक के नाम लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
यह अवतरण राष्ट्र की अवधारणा — भूमि, जन और संस्कृति की त्रयी — पर केन्द्रित सांस्कृतिक-राष्ट्रवादी निबन्ध-शैली का है, जो आचार्य वासुदेवशरण अग्रवाल की राष्ट्र-सम्बन्धी निबन्ध-परम्परा से मेल खाता है; प्रकाशित पाठ्यपुस्तक में अंकित यही शीर्षक/लेखक-नाम अंतिम उत्तर के रूप में लिखें।

3(b). *गद्यांश:* राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है। मनुष्यों ने युगों-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना कबंध मात्र है, संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि सम्भव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है।

(ख) राष्ट्र का तीसरा अंग क्या है?

Correct Answer: –

Solution:

उत्तर:
गद्यांश के अनुसार राष्ट्र के दो अंग भूमि और जन के अतिरिक्त, **जन की संस्कृति** राष्ट्र का तीसरा अंग है।

3(c). *गद्यांश:* राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है। मनुष्यों ने युगों-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना कबंध मात्र है, संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि सम्भव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है।

(ग) जन का मस्तिष्क क्या है?

Correct Answer: –

Solution:

उत्तर:
गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है – '**संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है**', अर्थात संस्कृति ही जन-समुदाय को चिन्तन-शक्ति एवं दिशा प्रदान करती है।

3(d). *गद्यांश:* राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है। मनुष्यों ने युगों-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना कबंध मात्र है, संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि सम्भव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है।

(घ) राष्ट्र की वृद्धि किस प्रकार सम्भव है?

Correct Answer: –

Solution:

उत्तर:
गद्यांश के अनुसार **संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही** राष्ट्र की वृद्धि सम्भव है।

3(e). *गद्यांश:* राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है। मनुष्यों ने युगों-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन की श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना कबंध मात्र है, संस्कृति ही जन का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और अभ्युदय के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि सम्भव है। राष्ट्र के समग्र रूप में भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थान है।

(ङ) राष्ट्र के समग्र रूप में किन चीजों का महत्वपूर्ण स्थान है?

Correct Answer: –

Solution:

उत्तर:
राष्ट्र के समग्र रूप में **भूमि और जन के साथ-साथ जन की संस्कृति** का महत्वपूर्ण स्थान है – ये तीनों मिलकर ही राष्ट्र का पूर्ण स्वरूप निर्मित करते हैं।

OR

3(a). *पद्यांश:* रोकहिं जो तो अमंगल होय औ प्रेम नसै जो कहैं पिय जाइये। जौ कहे जाहु न तो प्रभुता जौ कहूँ न कहै तो सनेह नसाइये। जो 'हरिचंद कहैं तुमरे बिनु जीहै' न तो यह क्यौ पतिआइये। तासों पयान समै तुमरे हम का कहैं आपै हमै समझाइये।।

(क) उपर्युक्त पद्यांश के पाठ और रचयिता का नाम लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

उत्तर:
पंक्ति के अंत में 'हरिचंद' छाप (नाम-मुद्रा) होने से स्पष्ट है कि यह पद्यांश आधुनिक

हिन्दी गद्य-पद्य के जनक **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** की ब्रजभाषा-रचना से लिया गया है।

3(b). *पद्यांश:* रोकहिं जो तो अमंगल होय औ प्रेम नसै जो कहैं पिय जाइये। जौ कहे जाहु न तो प्रभुता जौ कहूँ न कहै तो सनेह नसाइये। जो 'हरिचंद कहैं तुमरे बिनु जीहै' न तो यह क्यौ पतिआइये। तासों पयान समै तुमरे हम का कहैं आपै हमै समझाइये।।

(ख) रेखांकित अंश ('जौ कहे जाहु न तो प्रभुता जौ कहूँ न कहै तो सनेह नसाइये') की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

व्याख्या:
नायिका असमंजस में है — यदि वह पति को यात्रा पर जाने से मना करे तो यह उसकी प्रभुता (अधिकार जताने) जैसा प्रतीत होगा, और यदि वह चुप रहकर कुछ न कहे तो उसका प्रेम ही संदिग्ध या नष्ट माना जाएगा। इस प्रकार कवि ने विरह-वेदना में डूबी नायिका के मनोद्वन्द्व को अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किया है।

3(c). *पद्यांश:* रोकहिं जो तो अमंगल होय औ प्रेम नसै जो कहैं पिय जाइये। जौ कहे जाहु न तो प्रभुता जौ कहूँ न कहै तो सनेह नसाइये। जो 'हरिचंद कहैं तुमरे बिनु जीहै' न तो यह क्यौ पतिआइये। तासों पयान समै तुमरे हम का कहैं आपै हमै समझाइये।।

(ग) प्रस्तुत पद्यांश किस भाषा में लिखा गया है?

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
यह पद्यांश **ब्रजभाषा** में रचित है, जो भारतेन्दु-युग की प्रमुख काव्य-भाषा रही है।

3(d). *पद्यांश:* रोकहिं जो तो अमंगल होय औ प्रेम नसै जो कहैं पिय जाइये। जौ कहे जाहु न तो प्रभुता जौ कहूँ न कहै तो सनेह नसाइये। जो 'हरिचंद कहैं तुमरे बिनु जीहै' न तो यह क्यौ पतिआइये। तासों पयान समै तुमरे हम का कहैं आपै हमै समझाइये।।

(घ) 'प्रभुता' और 'सनेह' शब्दों के अर्थ लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

शब्दार्थ:
प्रभुता = स्वामित्व/अधिकार जताने की भावना; **सनेह** = स्नेह, प्रेम।

3(e). *पद्यांश:* रोकहिं जो तो अमंगल होय औ प्रेम नसै जो कहैं पिय जाइये। जौ कहे जाहु न तो प्रभुता जौ कहूँ न कहै तो सनेह नसाइये। जो 'हरिचंद कहैं तुमरे बिनु जीहै' न तो यह क्यौ पतिआइये। तासों पयान समै तुमरे हम का कहैं आपै हमै समझाइये।।

(ङ) नायिका किस बात में प्रभुता नहीं मानती है?

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
नायिका पति को यात्रा पर जाने से **रोकने** में प्रभुता नहीं मानती — वह ऐसा मानती है कि पति को रोकना उन पर अपना अधिकार जताना होगा, इसलिए वह रोकने से बचती है।

4(a). देख-देख नाचता हृदय बहने को महाविकल-बेकल, इस मरोर से - इसी शोर से सघन घोर गुरु गहन रोर से मुझे गगन का दिखा सघन वह छोर राग अमर! अंबर में भर निज रोर।

(क) उपर्युक्त पद्यांश के पाठ और रचयिता का नाम लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
बादलों की गंभीर गर्जना और प्रकृति के उद्वेलित रूप का यह चित्रण छायावादी कवि **सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'** की मेघ-विषयक कविता 'बादल राग' से लिया गया प्रतीत होता है।

4(b). देख-देख नाचता हृदय बहने को महाविकल-बेकल, इस मरोर से - इसी शोर से सघन घोर गुरु गहन रोर से मुझे गगन का दिखा सघन वह छोर राग अमर! अंबर में भर निज रोर।

(ख) रेखांकित अंश ('देख-देख नाचता हृदय बहने को महाविकल-बेकल') की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

व्याख्या:
बादलों की गर्जना और आकाश की हलचल को देखकर कवि का हृदय स्वयं भी नाचने-सा (उद्वेलित होने) लगता है; वह प्रकृति की इस उमंग में बह जाने के लिए अत्यंत व्याकुल और बेचैन हो उठता है — यह पंक्ति कवि-हृदय और प्रकृति की गतिशीलता के तादात्म्य को व्यक्त करती है।

4(c). देख-देख नाचता हृदय बहने को महाविकल-बेकल, इस मरोर से - इसी शोर से सघन घोर गुरु गहन रोर से मुझे गगन का दिखा सघन वह छोर राग अमर! अंबर में भर निज रोर।

(ग) इस अवतरण में कवि किसकी गंभीर गर्जना के बारे में बात कर रहा है?

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
कवि आकाश में उमड़ते-घुमड़ते **बादलों (मेघों)** की गंभीर गर्जना के बारे में बात कर रहा है।

4(d). देख-देख नाचता हृदय बहने को महाविकल-बेकल, इस मरोर से - इसी शोर से सघन घोर गुरु गहन रोर से मुझे गगन का दिखा सघन वह छोर राग अमर! अंबर में भर निज रोर।

(घ) 'बेकल' और 'रोर' शब्दों के अर्थ लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

शब्दार्थ:
बेकल = व्याकुल, अधीर; **रोर** = गर्जन, शोर, कोलाहल।

4(e). देख-देख नाचता हृदय बहने को महाविकल-बेकल, इस मरोर से - इसी शोर से सघन घोर गुरु गहन रोर से मुझे गगन का दिखा सघन वह छोर राग अमर! अंबर में भर निज रोर।

(ङ) इस पद्यांश में कवि ने किस प्रसंग का वर्णन किया है?

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
कवि ने आकाश में घिरते बादलों की उमड़-घुमड़ और उनकी गंभीर गर्जना से उत्पन्न प्रकृति की उद्वेलित, उत्तेजित अवस्था तथा उसमें अपने हृदय की सहभागिता के प्रसंग का वर्णन किया है।

OR

4(a). भाषा स्वयं संस्कृति का एक अटूट अंग है। संस्कृति परंपरा से निःसृत होने पर भी परिवर्तनशील और गतिशील है। उसकी गति विज्ञान की प्रगति के साथ जोड़ी जाती है। वैज्ञानिक आविष्कारों के प्रभाव के कारण उद्भूत नयी सांस्कृतिक हलचलों को शाब्दिक रूप देने के लिए भाषा के परंपरागत रूप पर्याप्त नहीं हैं।

(क) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक के नाम लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

उत्तर:
यह अवतरण भाषा और संस्कृति के अंतर्सम्बन्ध पर केन्द्रित निबन्ध-शैली का है; प्रकाशित पाठ्यपुस्तक में अंकित शीर्षक/लेखक-नाम अंतिम उत्तर के रूप में लिखें।

4(b). भाषा स्वयं संस्कृति का एक अटूट अंग है। संस्कृति परंपरा से निःसृत होने पर भी परिवर्तनशील और गतिशील है। उसकी गति विज्ञान की प्रगति के साथ जोड़ी जाती है। वैज्ञानिक आविष्कारों के प्रभाव के कारण उद्भूत नयी सांस्कृतिक हलचलों को शाब्दिक रूप देने के लिए भाषा के परंपरागत रूप पर्याप्त नहीं हैं।

(ख) रेखांकित अंश ('संस्कृति परंपरा से निःसृत होने पर भी परिवर्तनशील और गतिशील है') की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

व्याख्या:
यद्यपि संस्कृति की जड़ें परम्परा में होती हैं, तथापि वह स्थिर या जड़ नहीं रहती — वह समय के साथ बदलती और आगे बढ़ती रहती है। लेखक इसे विज्ञान की प्रगति से जोड़ते हुए स्पष्ट करते हैं कि जैसे-जैसे नये वैज्ञानिक आविष्कार होते हैं, संस्कृति भी उसी गति से नया रूप ग्रहण करती जाती है — वह परम्परा में बँधी रहकर भी गतिशील बनी रहती है।

4(c). भाषा स्वयं संस्कृति का एक अटूट अंग है। संस्कृति परंपरा से निःसृत होने पर भी परिवर्तनशील और गतिशील है। उसकी गति विज्ञान की प्रगति के साथ जोड़ी जाती है। वैज्ञानिक आविष्कारों के प्रभाव के कारण उद्भूत नयी सांस्कृतिक हलचलों को शाब्दिक रूप देने के लिए भाषा के परंपरागत रूप पर्याप्त नहीं हैं।

(ग) भाषा किसका अटूट अंग है?

Correct Answer: –

Solution:

उत्तर:
गद्यांश के अनुसार **भाषा संस्कृति का एक अटूट अंग है** – दोनों एक-दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हैं।

4(d). भाषा स्वयं संस्कृति का एक अटूट अंग है। संस्कृति परंपरा से निःसृत होने पर भी परिवर्तनशील और गतिशील है। उसकी गति विज्ञान की प्रगति के साथ जोड़ी जाती है। वैज्ञानिक आविष्कारों के प्रभाव के कारण उद्भूत नयी सांस्कृतिक हलचलों को शाब्दिक रूप देने के लिए भाषा के परंपरागत रूप पर्याप्त नहीं हैं।

(घ) 'उद्भूत' और 'परम्परागत' शब्दों के अर्थ लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

शब्दार्थ:
उद्भूत = उत्पन्न हुआ, जन्मा हुआ; **परम्परागत** = परम्परा से चला आया हुआ, रूढ़िगत।

4(e). भाषा स्वयं संस्कृति का एक अटूट अंग है। संस्कृति परंपरा से निःसृत होने पर भी परिवर्तनशील और गतिशील है। उसकी गति विज्ञान की प्रगति के साथ जोड़ी जाती है। वैज्ञानिक आविष्कारों के प्रभाव के कारण उद्भूत नयी सांस्कृतिक हलचलों को शाब्दिक रूप देने के लिए भाषा के परंपरागत रूप पर्याप्त नहीं हैं।

(ङ) नयी सांस्कृतिक हलचलें कैसे उत्पन्न होती हैं?

Correct Answer: –

Solution:

उत्तर:
गद्यांश के अनुसार **वैज्ञानिक आविष्कारों के प्रभाव के कारण** नयी सांस्कृतिक हलचलें उत्पन्न होती हैं, जिन्हें शब्दों में व्यक्त करने के लिए भाषा के परम्परागत रूप पर्याप्त नहीं रह जाते।

5(a). निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय देते हुए, उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द): **पं० दीनदयाल उपाध्याय**

Correct Answer: –

Solution:

जीवन-परिचय (लगभग 80 शब्द):
पं० दीनदयाल उपाध्याय (1916-1968) राजनीतिक चिंतक, संगठनकर्ता एवं निबंधकार थे। उन्होंने 'एकात्म मानववाद' के सिद्धांत का प्रतिपादन किया, जिसमें भारतीय संस्कृति के अनुरूप समग्र मानव-विकास की अवधारणा प्रस्तुत की गई। वे भारतीय जनसंघ के प्रमुख संगठक भी रहे।

प्रमुख कृतियाँ:
'राष्ट्र चिंतन', 'एकात्म मानववाद', 'भारतीय अर्थनीति: विकास की एक दिशा'।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय देते हुए, उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द): **कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'**

Correct Answer: –

Solution:

जीवन-परिचय (लगभग 80 शब्द):
कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (1906-1995) हिन्दी के सुप्रसिद्ध निबंधकार, रेखाचित्रकार एवं पत्रकार थे। उनकी भाषा-शैली सरस, आत्मीय और व्यंग्यात्मक है, जिसमें जीवन के सामान्य प्रसंगों को गहरी संवेदना से चित्रित किया गया है।

प्रमुख कृतियाँ:
'मिट्टी की बारात', 'जिंदगी मुस्कुराई', 'कुछ शब्द: कुछ रेखाएँ'।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय देते हुए, उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द): **वासुदेवशरण अग्रवाल**

Correct Answer: –

Solution:

जीवन-परिचय (लगभग 80 शब्द):
वासुदेवशरण अग्रवाल (1904-1967) पुरातत्वविद्, संस्कृतिविद् एवं गंभीर निबंधकार थे। भारतीय संस्कृति एवं इतिहास पर उनका गहन अध्ययन उनके निबंधों में झलकता है, जिनमें भारत की सांस्कृतिक एकता का चित्रण प्रमुखता से मिलता है।

प्रमुख कृतियाँ:
'पाणिनिकालीन भारत', 'कल्पवृक्ष', 'भारत की एकता'।

5(b). निम्नलिखित में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए, उनकी प्रमुख कृतियों पर प्रकाश डालिए (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द): **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'**

Correct Answer: –

Solution:

जीवन-परिचय (लगभग 80 शब्द):
अज्ञेय (1911-1987) प्रयोगवाद और नई कविता के प्रवर्तक कवि, कथाकार एवं सम्पादक थे। उन्होंने 'तारसप्तक' के सम्पादन द्वारा नई काव्य-प्रवृत्तियों को मंच दिया और व्यक्ति की स्वतंत्र चेतना को अपने काव्य का केंद्र बनाया।

प्रमुख कृतियाँ:
'तारसप्तक' (सम्पादन), 'शेखर: एक जीवनी' (उपन्यास), 'हरी घास पर क्षण भर' (काव्य-संग्रह)।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए, उनकी प्रमुख कृतियों पर प्रकाश डालिए (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द): **जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'**

Correct Answer: –

Solution:

जीवन-परिचय (लगभग 80 शब्द):
जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' (1866-1932) ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि थे, जिन्होंने भारतेंदु-युगीन परम्परा को आगे बढ़ाते हुए शृंगारपरक एवं प्रकृति-चित्रणपरक काव्य की रचना की।

प्रमुख कृतियाँ:
'उद्धव-शतक', 'गंगावतरण', 'हिंडोला'।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए, उनकी प्रमुख कृतियों पर प्रकाश डालिए (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द): **सुमित्रानंदन पंत**

Correct Answer: –

Solution:

जीवन-परिचय (लगभग 80 शब्द):
सुमित्रानंदन पंत (1900-1977) छायावाद के प्रमुख स्तंभ कवि थे, जिन्हें प्रकृति-सौंदर्य के सूक्ष्म चित्रण के लिए जाना जाता है। उन्हें 'चिदंबरा' काव्य-संग्रह पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

प्रमुख कृतियाँ:
'पल्लव', 'गुंजन', 'चिदंबरा'।

6. 'खून का रिश्ता' कहानी के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए। (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

नोट:
यह UP Board की निर्धारित पाठ्यपुस्तक में संकलित एक विशिष्ट कहानी है; सटीक कथानक-विवरण प्रकाशित पाठ्यपुस्तक से सत्यापित किया जाए। सामान्यतः 'खून का रिश्ता' शीर्षक रक्त-सम्बन्ध बनाम मानवीय/सामाजिक सम्बन्धों के द्वन्द्व को केंद्र में रखता है।

चरित्र-चित्रण की रूपरेखा:
कहानी का प्रमुख पात्र पारिवारिक कर्तव्य, संवेदनशीलता और सामाजिक मूल्यों के मध्य द्वन्द्व से गुजरता है। उसके चरित्र में त्याग, ममत्व और आत्मसंघर्ष की प्रवृत्ति प्रमुखता से उभरती है — वह रक्त-सम्बन्धों की परिधि से परे मानवीय सम्बन्धों की गरिमा को महत्व देता प्रतीत होता है, जो कहानी के शीर्षक के मूल भाव को साकार करता है।

OR

'लाटी' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। (अधिकतम शब्द-सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

नोट:
सटीक कथानक-विवरण प्रकाशित पाठ्यपुस्तक से सत्यापित किया जाए। सामान्यतः 'लाटी' शीर्षक समाज के उपेक्षित, मूक-सरल व्यक्ति के माध्यम से मानवीय संवेदना एवं सामाजिक शोषण के यथार्थ को उद्घाटित करती प्रतीत होती है।

उद्देश्य:
कहानी का मूल उद्देश्य समाज के दबे-कुचले, सरल एवं वंचित वर्ग के प्रति संवेदना जगाना तथा यह दर्शाना है कि बाह्य दुर्बलता या मूकता के भीतर भी एक सजीव, संवेदनशील मनुष्यता विद्यमान रहती है — कहानीकार इसके माध्यम से सामाजिक विषमता एवं मानवीय गरिमा के प्रश्न को उठाते हैं।

7(a). 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के अंतिम सर्ग की घटना पर प्रकाश डालिए।

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर (रामधारी सिंह 'दिनकर' रचित 'रश्मिरथी'):
सप्तम (अंतिम) सर्ग में कुरुक्षेत्र के युद्ध में कर्ण और अर्जुन के मध्य निर्णायक द्वंद्व का चित्रण है। युद्ध के मध्य कर्ण का रथ-चक्र धरती में धँस जाता है और वह निःशस्त्र होकर धर्मयुद्ध की दुहाई देता है, किन्तु श्रीकृष्ण अर्जुन को कर्ण के अतीत के अन्यायों (द्रौपदी-अपमान, अभिमन्यु-वध में सहभागिता आदि) का स्मरण कराकर प्रहार हेतु प्रेरित करते हैं। अंततः अर्जुन के बाण से कर्ण की मृत्यु होती है — एक ऐसा अंत जो कर्ण की सम्पूर्ण त्रासद नियति और उसकी अंतर्निहित उदारता को गहराई से उभारता है।

OR

'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के आधार पर 'कुन्ती' को चरित्र-चित्रण कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
कुन्ती का चरित्र मातृत्व और कर्तव्य के मध्य गहरे द्वन्द्व से चिह्नित है। सामाजिक भय के कारण उन्होंने अपने प्रथम पुत्र कर्ण को त्याग दिया था, किन्तु युद्ध से पूर्व वे स्वयं कर्ण के पास जाकर उसकी वास्तविक पहचान बताती हैं और उससे पांडवों के विरुद्ध शस्त्र न उठाने का वचन माँगती हैं। इसमें उनकी ग्लानि, वात्सल्य और व्यावहारिक चिंता — तीनों भाव एक साथ प्रकट होते हैं, जो उन्हें एक जटिल किन्तु मानवीय पात्र बनाते हैं।

7(b). 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
श्रवण कुमार पितृ-मातृ भक्ति के आदर्श पात्र हैं। अपने अंधे माता-पिता को कावड़ में बिठाकर तीर्थयात्रा कराते हुए उन्होंने असीम सेवा-भाव और त्याग का परिचय दिया। राजा दशरथ द्वारा जल भरते समय अनजाने में शब्दभेदी बाण से आहत होने पर भी उन्होंने अपने माता-पिता की चिंता को सर्वोपरि रखा। उनका चरित्र निःस्वार्थ सेवा, कर्तव्यनिष्ठा और अगाध पितृभक्ति का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।

OR

'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य की विशेषताएँ संक्षेप में लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
इस खण्डकाव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं — (1) सरल, मार्मिक भाषा-शैली, (2) पितृभक्ति एवं त्याग के आदर्श मूल्यों की स्थापना, (3) करुण रस की प्रधानता, विशेषतः श्रवण-वध तथा दशरथ-श्राप प्रसंग में, (4) पौराणिक कथा को काव्यात्मक संवेदना के साथ पुनर्जीवित करना, तथा (5) पारिवारिक कर्तव्य और मानवीय संवेदना का सुंदर समन्वय।

7(c). 'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डालिए।

Correct Answer: —

Solution:

नोट:
सटीक सर्गानुक्रम प्रकाशित पाठ्यपुस्तक से सत्यापित किया जाए। यह खण्डकाव्य महात्मा गांधी के जीवन-प्रसंगों पर आधारित प्रतीत होता है।

उत्तर:
इस खण्डकाव्य में महात्मा गांधी के जीवन की प्रमुख घटनाओं — सत्य व अहिंसा के प्रति उनकी निष्ठा, सत्याग्रह आंदोलनों का प्रवर्तन, स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान तथा उनके सिद्धांतों द्वारा जन-जागरण — का काव्यात्मक चित्रण किया गया है, जो उनके जीवन को एक प्रकाश-वृत्त (आलोक-वृत्त) के रूप में प्रस्तुत करता है।

OR

'आलोक-वृत्त' खण्डकाव्य के आधार पर 'महात्मा गाँधी' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
महात्मा गांधी का चरित्र सत्य, अहिंसा, सादगी और अटूट आत्मबल का प्रतीक है। वे कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अपने सिद्धांतों से विचलित नहीं होते और सत्याग्रह के माध्यम से बिना शस्त्र उठाए अंग्रेजी शासन के विरुद्ध व्यापक जन-आंदोलन खड़ा करते हैं। उनका चरित्र करुणा, सेवा-भाव और दृढ़ नैतिक निष्ठा का अनूठा संगम है।

7(d). 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

नोट:
सटीक विवरण प्रकाशित पाठ्यपुस्तक से सत्यापित किया जाए। शीर्षक से यह खण्डकाव्य स्वतंत्रता/बलिदान के यज्ञ-भाव पर आधारित प्रतीत होता है।

उत्तर:
इस खण्डकाव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं — (1) राष्ट्रीय चेतना एवं बलिदान की भावना का ओजपूर्ण चित्रण, (2) स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत पात्रों के त्याग का यज्ञ के रूपक में प्रस्तुतीकरण, (3) वीर एवं करुण रस का समन्वय, तथा (4) प्रेरणादायी, ओजस्वी भाषा-शैली।

OR

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डालिए।

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
खण्डकाव्य में नायक/नायिका के त्याग एवं बलिदान से जुड़ी घटनाओं का क्रमिक चित्रण है, जिसमें स्वतंत्रता या किसी उच्च आदर्श की प्राप्ति हेतु व्यक्तिगत सुख-स्वार्थ

के त्याग को यज्ञ के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो अंततः 'मुक्ति' (स्वाधीनता/मोक्ष) की प्राप्ति में परिणत होता है।

7(e). 'त्यागपथी' खण्डकाव्य की वह घटना जो आपको प्रेरणादायी लगी हो, उसका संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

नोट:
सटीक विवरण प्रकाशित पाठ्यपुस्तक से सत्यापित किया जाए। शीर्षक से यह खण्डकाव्य त्याग के पथ पर चलने वाले किसी पात्र के जीवन पर आधारित प्रतीत होता है।

उत्तर:
खण्डकाव्य का वह प्रसंग सर्वाधिक प्रेरणादायी है जिसमें नायक व्यक्तिगत सुख-सुविधा और स्वार्थ का त्याग कर उच्चतर सामाजिक/नैतिक आदर्श को अपनाता है। यह घटना यह सिखाती है कि सच्चा त्याग ही मनुष्य को महानता की ओर ले जाता है, और स्वार्थ-त्याग द्वारा ही समाज का व्यापक कल्याण सम्भव है।

OR

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के प्रमुख नारी पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
खण्डकाव्य की प्रमुख नारी पात्र त्याग, सहनशीलता एवं आत्मबल की प्रतिमूर्ति है। वह कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं खोती और अपने कर्तव्य-पालन में दृढ़ रहती है।

उसके चरित्र में मातृत्व, करुणा और नैतिक साहस का अद्भुत सामंजस्य दिखाई देता है, जो उसे खण्डकाव्य की सबसे प्रभावशाली पात्र बनाता है।

7(f). 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर 'युधिष्ठिर' का चरित्रांकन कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

उत्तर:
युधिष्ठिर का चरित्र सत्य, धर्म और नैतिक निष्ठा का सर्वोच्च आदर्श है। द्यूत-क्रीड़ा में सब कुछ हारने पर भी वे अपने वचन से विचलित नहीं होते, और वनवास-अज्ञातवास के कष्टों को धैर्यपूर्वक सहते हैं। स्वर्गारोहण के अंतिम प्रसंग में भी वे अपने साथ आए वफादार कुत्ते को त्यागने से इनकार कर देते हैं — यह घटना उनकी सत्यनिष्ठा एवं करुणा की चरम परिणति है।

OR

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

उत्तर:
इस खण्डकाव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं — (1) सत्य और धर्म की अंतिम विजय का प्रतिपादन, (2) युधिष्ठिर जैसे आदर्श चरित्र के माध्यम से नैतिक मूल्यों की स्थापना, (3) शांत एवं करुण रस की प्रधानता, तथा (4) महाभारत की कथा-परम्परा को काव्यात्मक ढंग से पुनर्प्रस्तुत करना।

8(a). निम्नलिखित संस्कृत गद्यांश में से किसी एक का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

संस्कृतस्य साहित्यं सरसं, व्याकरणश्च सुनिश्चितम् । तस्य गद्ये पद्ये च लालित्यं, भावबोधसामर्थ्यम्, अद्वितीयं श्रुतिमाधुर्यश्च वर्तते । किं बहुना चरित्रनिर्माणार्थं यादृशीं सत्प्रेरणां संस्कृतवाङ्मयं ददाति न तादृशीं किञ्चिदन्यत् । मूलभूतानां मानवीयगुणानां यादृशी विवेचना संस्कृतसाहित्ये वर्तते, नान्यत्र तादृशी । दया, दान, शौचम्, औदार्यम्, अनसूया, क्षमा अन्ये चानेके गुणाः अस्य साहित्यस्य अनुशीलनेन सञ्जायते ।

Correct Answer: –

Solution:

सन्दर्भः

प्रस्तुत गद्यांश संस्कृत साहित्य के गुण-वैशिष्ट्य एवं चरित्र-निर्माण में उसकी भूमिका का प्रतिपादन करता है।

हिन्दी अनुवादः

संस्कृत का साहित्य रसपूर्ण है, और उसका व्याकरण सुनिश्चित (सुव्यवस्थित) है। उसके गद्य और पद्य दोनों में सुन्दरता, भावों को समझने की सामर्थ्य तथा अद्वितीय श्रवण-माधुर्य विद्यमान है। अधिक क्या कहें – चरित्र-निर्माण के लिए संस्कृत साहित्य जैसी सत्प्रेरणा अन्य कोई साहित्य नहीं देता। मूलभूत मानवीय गुणों का जैसा गहन विवेचन संस्कृत साहित्य में मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। दया, दान, पवित्रता, उदारता, ईर्ष्यारहितता, क्षमा तथा अन्य अनेक सद्गुण इस साहित्य के अध्ययन से उत्पन्न होते हैं।

OR

निम्नलिखित संस्कृत गद्यांश में से किसी एक का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए

अतीते प्रथमकल्पे चतुष्पदाः सिंहं राजानमकुर्वत् । मत्स्या आनन्दमत्स्यं, शकुनयः सुवर्णहंसम् । तस्य पुनः सुवर्णराजहंसस्य दुहिता हंसपोतिका अतीव रूपवती आसीत् । स तस्यै वरमदात् यत् सा आत्मनश्चिररुचितं स्वामिनं वृणुयात् इति । हंसराजः तस्यै वरं दत्वा हिमवति शकुनिसङ्घे संन्यपतत् । नानाप्रकाराः हंसमयूरादयः शकुनिगणाः समागत्य एकस्मिन् महति पाषाणतले संन्यपतन् ।

Correct Answer: –

Solution:

सन्दर्भ:
प्रस्तुत गद्यांश एक पशु-पक्षी कथा से लिया गया है, जिसमें विभिन्न प्राणी-वर्गों द्वारा अपने-अपने राजा चुने जाने की कथा वर्णित है।

हिन्दी अनुवाद:
अतीत काल (प्रथम युग) में चौपायों ने सिंह को अपना राजा बनाया। मछलियों ने आनन्द-मत्स्य को, और पक्षियों ने स्वर्ण-हंस को (अपना राजा बनाया)। उस स्वर्ण-राजहंस की पुत्री हंसपोतिका अत्यंत रूपवती थी। उसने (राजहंस ने) उसे यह वरदान दिया कि वह स्वयं अपनी दीर्घकालिक अभिलाषा के अनुसार अपना स्वामी (वर) स्वयं चुन ले। हंसराज ने उसे यह वरदान देकर हिमालय पर पक्षी-समूह के मध्य विश्राम किया। नाना प्रकार के हंस, मयूर आदि पक्षिगण एकत्रित होकर एक विशाल पाषाण-तल (चट्टान) पर बैठ गए।

8(b). निम्नलिखित संस्कृत पद्यांशों में से किसी एक का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए:
अनाकृष्टस्य विषयैर्विद्यानां पारदृश्वनः । तस्य धर्मरतेरासीद् वृद्धत्वं जरसा विना ।।

Correct Answer: –

Solution:

सन्दर्भ:
यह श्लोक महाकवि कालिदास रचित 'रघुवंश' महाकाव्य से लिया गया है, जिसमें राजा दिलीप के आदर्श चरित्र का वर्णन है।

हिन्दी अनुवाद:
जो राजा भोग-विषयों से अनाकर्षित (अप्रभावित) रहते थे, समस्त विद्याओं के पारदर्शी

(पूर्ण ज्ञाता) थे, तथा सदैव धर्म में रत रहते थे — ऐसे उस राजा (दिलीप) की वृद्धावस्था जरा (शारीरिक क्षीणता) के बिना ही आई, अर्थात् वृद्ध होकर भी वे शारीरिक व मानसिक रूप से क्षीण नहीं हुए।

OR

निम्नलिखित संस्कृत पद्यांशों में से किसी एक का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए
न चौरहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि । व्यये कृते वर्द्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनं प्रधानम् ।।

Correct Answer: —

Solution:

सन्दर्भ:
यह प्रसिद्ध सुभाषित-श्लोक विद्या के महत्व एवं उसकी अद्वितीय विशेषताओं का प्रतिपादन करता है।

हिन्दी अनुवाद:
जो न चोरों द्वारा चुराया जा सकता है, न राजा द्वारा छीना जा सकता है, न भाइयों में बाँटा जा सकता है और न ही जिसका कोई बोझ होता है — ऐसा विद्या-रूपी धन खर्च करने (बाँटने) पर भी सदैव बढ़ता ही रहता है; अतः विद्या-धन ही समस्त धनों में सर्वश्रेष्ठ (प्रधान) है।

9(a). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए। (क) मूर्खाणां कालः कथम् गच्छति?

Correct Answer: —

Solution:

संस्कृत उत्तर:
मूर्खाणां कालः क्रीडया शयनेन कलहेन वा गच्छति ।

हिन्दी भावार्थ:
मूर्खों का समय क्रीड़ा (खेल), शयन (सोने) अथवा कलह (झगड़े) में व्यतीत होता है — यह एक प्रसिद्ध संस्कृत सुभाषित का भाव है।

9(c). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए। (ग) हिन्दू विश्वविद्यालयस्य संस्थापकः कः आसीत्?

Correct Answer: —

Solution:

संस्कृत उत्तर:
हिन्दू विश्वविद्यालयस्य (काशी हिन्दू विश्वविद्यालयस्य) संस्थापकः महामनाः पण्डित मदनमोहनमालवीयः आसीत् ।

हिन्दी भावार्थ:
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय जी ने सन् 1916 में की थी — यही इस प्रश्न का सही उत्तर है।

10(a). 'हास्य' रस अथवा 'करुण' रस की परिभाषा लिखकर एक उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

परिभाषा:
विचित्र वेशभूषा, वाणी, चेष्टा आदि विभावों को देखकर हृदय में जो हास नामक स्थायी भाव जाग्रत होकर रस-रूप में परिपुष्ट होता है, उसे **हास्य रस** कहते हैं।

उदाहरण:

"नाक-भौं सिकोड़े, टेढ़ी पगड़ी बाँधे चला जाता है पंडित जी का बालक, देख सभी हँस पड़े।" — इस प्रकार की चेष्टाओं का वर्णन हास्य रस उत्पन्न करता है।

10(b). उपमा अलंकार अथवा श्लेष अलंकार की परिभाषा लिखकर एक उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

परिभाषा:
जहाँ उपमेय (जिसकी तुलना की जाए) की उपमान (जिससे तुलना की जाए) के साथ किसी समान धर्म के आधार पर, वाचक शब्द सहित, समानता वर्णित की जाए, वहाँ **उपमा अलंकार** होता है।

उदाहरण: "मुख चन्द्रमा के समान सुंदर है।" (यहाँ मुख=उपमेय, चन्द्रमा=उपमान, सुंदर=समान धर्म, 'समान'=वाचक शब्द)।

10(c). 'सोरठा' छन्द अथवा 'वसन्ततिलका' छन्द की परिभाषा लिखकर एक उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

परिभाषा:
सोरठा मात्रिक छंद है, जो दोहे का उल्टा (विपरीत क्रम) रूप है — इसमें भी चार चरण होते हैं, परन्तु प्रथम व तृतीय चरण में 11-11 मात्राएँ तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं (दोहे में यह क्रम उलटा होता है)।

उदाहरण: तुलसीदासकृत 'रामचरितमानस' में सोरठा छंद के अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं, जो कथा-प्रसंगों को गति प्रदान करते हैं।

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: **सोशल मीडिया : वरदान या अभिशाप**

Correct Answer: —

Solution:

प्रस्तावना:
आधुनिक युग सूचना-क्रांति का युग है, जिसमें सोशल मीडिया ने संचार के स्वरूप को पूर्णतः बदल दिया है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, ट्विटर (X) जैसे मंचों ने विश्व को एक 'ग्लोबल विलेज' में बदल दिया है।

वरदान के रूप में:
सोशल मीडिया ने दूर बैठे लोगों को क्षणभर में जोड़ दिया है। शिक्षा, व्यापार, रोजगार, जनजागरण एवं आपदा-सहायता में यह अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है। छात्रों के लिए ऑनलाइन शिक्षण-सामग्री सुलभ हुई है और छोटे उद्यमियों को अपने उत्पाद विश्व-स्तर पर प्रस्तुत करने का अवसर मिला है।

अभिशाप के रूप में:
दूसरी ओर, इसके दुष्प्रभाव भी कम नहीं हैं — अफवाहों का तीव्र प्रसार, साइबर-अपराध, गोपनीयता की हानि, मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव और युवाओं में समय की बर्बादी जैसी समस्याएँ गंभीर चुनौती बन गई हैं।

उपसंहार:
अतः सोशल मीडिया स्वयं में न तो पूर्णतः वरदान है, न पूर्णतः अभिशाप — यह हमारे विवेकपूर्ण उपयोग पर निर्भर करता है। संयमित एवं उद्देश्यपूर्ण उपयोग से ही यह वास्तव में वरदान सिद्ध हो सकता है।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: **जीवन और समय प्रबन्धन**

Correct Answer: –

Solution:

प्रस्तावना:
समय जीवन की सबसे मूल्यवान सम्पत्ति है, जो एक बार बीत जाने पर पुनः प्राप्त नहीं होती। सफल जीवन का रहस्य समय के सुनियोजित प्रबंधन में ही निहित है।

समय-प्रबंधन का महत्व:
जो व्यक्ति अपने समय का सदुपयोग करना सीख लेता है, वही जीवन में उन्नति के शिखर तक पहुँच पाता है। समय-प्रबंधन से कार्यक्षमता बढ़ती है, तनाव कम होता है तथा लक्ष्य-प्राप्ति सरल हो जाती है।

समय-प्रबंधन के उपाय:
दैनिक कार्यों की प्राथमिकता निर्धारित करना, समय-सारणी बनाना, आलस्य एवं विलंब (procrastination) से बचना तथा अनावश्यक गतिविधियों में समय न गँवाना — ये सभी सुव्यवस्थित जीवन के आधार हैं।

उपसंहार:
'समय ही धन है' — यह उक्ति आज भी उतनी ही सार्थक है। जो विद्यार्थी अथवा व्यक्ति समय का सम्मान करना सीख लेता है, वही जीवन के हर क्षेत्र में सफलता अर्जित करता है।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: **वन-संरक्षण का महत्त्व**

Correct Answer: –

Solution:

प्रस्तावना:
वन प्रकृति का अमूल्य उपहार हैं, जो न केवल पर्यावरण को संतुलित रखते हैं, अपितु मानव-जीवन के अस्तित्व के लिए भी अनिवार्य हैं।

वनों का महत्व:
वन ऑक्सीजन के स्रोत हैं, वर्षा-चक्र को नियमित करते हैं, मृदा-अपरदन रोकते हैं, जैव-विविधता को सुरक्षित रखते हैं तथा जलवायु-परिवर्तन के दुष्प्रभावों को कम करते हैं। लाखों लोगों की आजीविका भी वनों पर आधारित है।

वन-विनाश के दुष्परिणाम:
अंधाधुंध वनों की कटाई से भूमि-क्षरण, बाढ़, सूखा, वन्यजीवों का विलोपन तथा वैश्विक तापन जैसी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

संरक्षण के उपाय:
वृक्षारोपण अभियान, वन-कानूनों का कठोरता से पालन, जन-जागरूकता तथा वैकल्पिक ऊर्जा-स्रोतों का प्रयोग वन-संरक्षण में सहायक हो सकते हैं।

उपसंहार: "वृक्ष हैं तो हम हैं" — इस भावना के साथ वन-संरक्षण को जन-आंदोलन बनाना समय की माँग है।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: **राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त**

Correct Answer: —

Solution:

प्रस्तावना:
मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964) हिन्दी साहित्य के 'राष्ट्रकवि' के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जिन्होंने अपनी कविता के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना एवं भारतीय संस्कृति का उद्घोष किया।

जीवन-परिचय:
उनका जन्म झाँसी जिले के चिरगाँव में हुआ था। वे द्विवेदी-युग के प्रमुख कवि रहे और उनकी रचनाओं में राष्ट्रीयता, नारी-गरिमा तथा पौराणिक-ऐतिहासिक प्रसंगों का सुंदर समन्वय मिलता है।

प्रमुख कृतियाँ:
'भारत-भारती', 'साकेत' (जिसमें उर्मिला के चरित्र को केंद्रीय स्थान दिया गया), 'यशोधरा', 'पंचवटी' आदि उनकी अमर कृतियाँ हैं। 'साकेत' के लिए उन्हें मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त हुआ।

योगदान:
उन्होंने स्वतंत्रता-आंदोलन के दौरान अपनी कविताओं के माध्यम से जन-मानस में देशभक्ति की भावना जगाई। महात्मा गांधी ने भी उनकी काव्य-प्रतिभा की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

उपसंहार:
मैथिलीशरण गुप्त का साहित्य आज भी राष्ट्रीय एकता एवं सांस्कृतिक गौरव की प्रेरणा देता है — यही उनकी चिरस्थायी विरासत है।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: **विश्व में हिन्दी के बढ़ते कदम**

Correct Answer: —

Solution:

प्रस्तावना:
हिन्दी भारत की राजभाषा ही नहीं, अपितु विश्व की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। वर्तमान समय में हिन्दी अंतरराष्ट्रीय मंचों पर निरंतर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है।

वैश्विक विस्तार:

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में भाषण, विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन, विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन-केंद्रों की स्थापना तथा भारतीय प्रवासियों के माध्यम से हिन्दी का वैश्विक प्रसार निरंतर बढ़ रहा है।

तकनीक का योगदान:
इंटरनेट, सोशल मीडिया, ओटीटी प्लेटफॉर्म तथा डिजिटल पत्रकारिता ने हिन्दी को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गूगल, यूट्यूब जैसे मंचों पर हिन्दी सामग्री की माँग तेजी से बढ़ रही है।

चुनौतियाँ:
अंग्रेजी के वर्चस्व, प्रशासनिक क्षेत्र में सीमित प्रयोग तथा मानकीकरण की कमी जैसी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं।

उपसंहार:
उचित नीतिगत प्रयासों एवं जन-सहभागिता से हिन्दी निश्चय ही विश्व-भाषा के रूप में अपना स्थान सुदृढ़ करती रहेगी।

12(a)(i). 'निश्चयः' का सन्धि-विच्छेद है

(A) निश् + चयः

(B) निस + चयः

(C) निस् + चयः

(D) निश + चयः

Correct Answer: (C) निस् + चयः

Solution:

व्याख्या:
श्चुत्व संधि नियम के अनुसार 'स्' के बाद 'च्' वर्ण आने पर 'स्' का 'श्' हो जाता है — निस् + चयः = निश्चयः।

अंतिम उत्तर:
अतः सही विच्छेद **निस् + चयः** है।

12(a)(ii). 'प्रोषति' का सन्धि-विच्छेद है

(A) प्रा + ओषति

(B) प्र + ओषति

(C) प्रौ + ओषति

(D) प्रे + ओषति

Correct Answer: (B) प्र + ओषति

Solution:

व्याख्या:
गुण संधि नियम के अनुसार अ/आ के बाद उ/ऊ या ओ जैसे स्वर आने पर 'ओ' बनता है — प्र (अ-अंत) + ओषति = प्रोषति।

अंतिम उत्तर:
प्र + ओषति।

12(a)(iii). 'गायति' का सन्धि-विच्छेद है

(A) गै + अति

(B) गे + अति

(C) गो + अति

(D) गौ + अति

Correct Answer: (A) गै + अति

Solution:

व्याख्या:
आयादि संधि नियम के अनुसार 'ऐ' के बाद कोई स्वर आने पर 'आय्' बनता है — गै + अति = ग् + आय् + अति = गायति।

अंतिम उत्तर:
गै + अति।

12(b). निम्नलिखित में से किसी एक पद का विग्रह करके समास स्पष्ट कीजिए: **महादेवः**

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
विग्रह: महान् देवः । **समास का नाम:** कर्मधारय समास — जहाँ पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य हो, तथा दोनों में विशेषण-विशेष्य सम्बन्ध हो।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक पद का विग्रह करके समास स्पष्ट कीजिए: **नीलकमलम्**

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
विग्रह: नीलं कमलम् । **समास का नाम:** कर्मधारय समास — यहाँ 'नील' विशेषण है और 'कमल' विशेष्य, दोनों के मध्य विशेषण-विशेष्य सम्बन्ध होने से यह कर्मधारय समास है।

OR

निम्नलिखित में से किसी एक पद का विग्रह करके समास स्पष्ट कीजिए: **अनुरूपम्**

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
विग्रह: रूपस्य योग्यम् / रूपम् अनुगतम् । **समास का नाम:** अव्ययीभाव समास — जहाँ समस्त पद अव्यय के समान प्रयुक्त होता है, वहाँ अव्ययीभाव समास होता है।

13(a)(i). निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में प्रत्यय बताइए। 'खादित्वा' शब्द में प्रत्यय है

(A) तव्यत्

(B) क्त्वा

(C) अनीयर्

(D) क्त

Correct Answer: (B) क्त्वा

Solution:

व्याख्या:
'खाद्' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने से 'खादित्वा' (खाकर) शब्द बनता है — यह पूर्वकालिक क्रिया (having done) का बोध कराने वाला प्रत्यय है।

अंतिम उत्तर:
क्त्वा।

13(a)(ii). निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में प्रत्यय बताइए। 'गन्तव्यः' शब्द में प्रत्यय है

(A) तव्यत्

(B) क्त

(C) अनीयर्

(D) क्त्वा

Correct Answer: (A) तव्यत्

Solution:

व्याख्या:
'गम्' धातु में 'तव्यत्' प्रत्यय लगने से 'गन्तव्यः' (जाने योग्य) शब्द बनता है — यह विध्यर्थक (कर्तव्य/आवश्यकता बोधक) प्रत्यय है।

अंतिम उत्तर:
तव्यत्।

13(a)(iii). निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों में प्रत्यय बताइए। 'श्रीमान्' शब्द में प्रत्यय है

(A) क्त

(B) वतुप्

(C) मतुप्

(D) त्व

Correct Answer: (C) मतुप्

Solution:

व्याख्या:
'श्री' शब्द में 'मतुप्' प्रत्यय लगने से 'श्रीमत्' (और प्रथमा एकवचन में 'श्रीमान्') बनता है — यह स्वामित्व/सम्पन्नता (possessing) बोधक प्रत्यय है।

अंतिम उत्तर:
मतुप्।

13(b). रेखांकित पदों में से किसी एक पद में प्रयुक्त विभक्ति तथा सम्बन्धित नियम लिखिए: **कृष्णम् अभितः गोपाः।**

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
रेखांकित पद में **द्वितीया विभक्ति** है।

नियम:
'अभितः' शब्द के योग में कर्म (जिसके चारों ओर की बात हो) में द्वितीया विभक्ति होती है — नियम: 'अभि-परि-तसोऽभितः-परितः-सर्वतः-सर्वशब्देभ्यश्च' के अनुसार 'अभितः' शब्द के प्रयोग में 'कृष्णम्' में द्वितीया विभक्ति है, जिसका अर्थ है 'कृष्ण के चारों ओर'।

OR

रेखांकित पदों में से किसी एक पद में प्रयुक्त विभक्ति तथा सम्बन्धित नियम लिखिए: **त्वं मया सार्धम् आपणं चल।**

Correct Answer: —

Solution:

उत्तर:
रेखांकित पद में **तृतीया विभक्ति** है।

नियम:
'सार्धम्' (साथ) शब्द के योग में तृतीया विभक्ति होती है — नियम: 'सहयुक्तेऽप्रधाने'

के अंतर्गत सार्धम्-समम्-साकम् आदि शब्दों के प्रयोग में तृतीया विभक्ति होती है, अतः 'मया' में तृतीया है, जिसका अर्थ है 'मेरे साथ'।

OR

रेखांकित पदों में से किसी एक पद में प्रयुक्त विभक्ति तथा सम्बन्धित नियम लिखिए:
प्रजाभ्यः स्वस्ति।

Correct Answer: –

Solution:

उत्तर:
रेखांकित पद में **चतुर्थी विभक्ति** है।

नियम:
'स्वस्ति' (कल्याण/मंगलकामना) शब्द के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है – नियम: 'नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधालंवषड्योगाच्च' के अनुसार नमः/स्वस्ति आदि शब्दों के प्रयोग में चतुर्थी विभक्ति होती है, अतः 'प्रजाभ्यः' में चतुर्थी है, जिसका अर्थ है 'प्रजा के लिए कल्याण हो'।

14. मुहल्ले में आवारा कुत्तों की समस्या के समाधान के लिए नगर निगम को एक पत्र लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

प्रारूप सहित पत्र:
सेवा में,
श्रीमान् नगर आयुक्त महोदय,
नगर निगम कार्यालय,
[शहर का नाम]

विषय: मुहल्ले में आवारा कुत्तों की समस्या के समाधान हेतु।

महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं [मुहल्ले का नाम] का निवासी हूँ। हमारे मुहल्ले में पिछले कुछ महीनों से आवारा कुत्तों की संख्या तेजी से बढ़ गई है, जिससे राहगीरों, विशेषकर बच्चों और वृद्धों को आए दिन भय और असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। कई बार ये कुत्ते झुंड बनाकर राहगीरों पर झपट पड़ते हैं, जिससे दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। रात्रि में इनके भौंकने से नींद में भी बाधा पड़ती है।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि नगर निगम की ओर से यथाशीघ्र इन आवारा कुत्तों की नसबंदी एवं टीकाकरण अभियान चलाया जाए तथा आवश्यकतानुसार इन्हें सुरक्षित स्थान पर स्थानांतरित करने की व्यवस्था की जाए, ताकि मुहल्लेवासी निर्भय होकर आवागमन कर सकें।

आपकी शीघ्र कार्यवाही के लिए सधन्यवाद।

भवदीय,
[नाम]
[पता]
[दिनांक]

OR

कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर अपने मित्र को बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

प्रारूप सहित पत्र:
परीक्षा भवन,
[शहर का नाम]

[दिनांक]

प्रिय मित्र [नाम],

सस्नेह नमस्ते। अभी-अभी मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि तुमने इस वर्ष कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यह सुनकर मेरा हृदय गर्व से भर उठा, क्योंकि मुझे भली-भाँति ज्ञात है कि तुमने इस सफलता के लिए कितनी लगन और परिश्रम किया है।

तुम्हारी यह उपलब्धि न केवल तुम्हारे लिए, अपितु तुम्हारे माता-पिता, शिक्षकों और हम सब मित्रों के लिए भी गौरव का विषय है। तुमने यह सिद्ध कर दिया कि सतत परिश्रम और दृढ़ संकल्प से कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं है।

मेरी हार्दिक शुभकामना है कि तुम इसी प्रकार निरंतर उन्नति के शिखर की ओर अग्रसर होते रहो और भविष्य में और भी बड़ी सफलताएँ अर्जित करो।

पुनः बधाई सहित,
तुम्हारा प्रिय मित्र,
[नाम]